The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

41. आधुनिक भारत और समकालीन मुद्दे

डॉ राखी परम सावलानी
स्वतंत्र शोधकर्ता
ई-मेल: dr.rakhisawlani@gmail.com

शोध सार

"आधुनिक भारत और समकालीन मुद्दे" विषय भारतीय समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, नैतिकता और लोकतांत्रिक विकास की बहुआयामी समझ प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन में रामचंद्र गुहा की पुस्तक 'इंडिया आफ्टर गाँधी', गुरचरन दास की पुस्तक 'द डिफीकल्टी ऑफ़ बीइंग गुड', पी. साईनाथ की पुस्तक 'एवरीबॉडी लव्स ए गुड ड्रॉट' तथा जवाहरलाल नेहरू की प्रसिद्ध कृति 'द डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया' के माध्यम से आधुनिक भारत की सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। 'इंडिया आफ्टर गाँधी' स्वतंत्रता के बाद भारत के राष्ट्र-निर्माण, लोकतंत्र, विभाजन, भाषाई विविधता, सामाजिक संघर्षों और राजनीतिक विकास का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक बताती है कि भारत का लोकतंत्र अनेक चुनौतियों के बावजूद कैसे जीवित और सक्रिय बना रहा है। महाभारत के पात्रों और प्रसंगों के माध्यम से नैतिकता, धर्म, कर्तव्य और व्यक्तिगत निर्णयों की जटिलताओं को समझाती है। यह आधुनिक जीवन में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता को रेखांकित करती है। यह पुस्तक ग्रामीण भारत की गरीबी, प्रशासनिक विफलताओं, सामाजिक असमानता और विकास योजनाओं की वास्तविकता को उजागर करती है। यह पुस्तक बताती है कि विकास के दावों के पीछे आम जनता, विशेषकर ग्रामीण और वंचित वर्ग, किस प्रकार संघर्ष कर रहा है। यह पुस्तक भारत की सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक चेतना, राष्ट्रीय एकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित आधुनिक भारत की कल्पना प्रस्तुत करती है। इन चारों पुस्तकों के संयुक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आधुनिक भारत विकास और विरोधाभासों का देश है—जहाँ एक ओर तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण और आर्थिक विस्तार है, वहीं दूसरी ओर गरीबी, सामाजिक विषमता, नैतिक संकट और लोकतांत्रिक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सच्चा विकास केवल आर्थिक वृद्धि नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, नैतिकता, समान अवसर, लोकतांत्रिक चेतना और मानवीय संवेदना पर आधारित होना चाहिए। आधुनिक भारत को समझने के लिए आलोचनात्मक दृष्टि, ऐतिहासिक समझ और सामाजिक उत्तरदायित्व अनिवार्य हैं।

प्रमुख शब्द: आधुनिक भारत, समकालीन मुद्दे, लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, नैतिकता, विकास, गरीबी, असमानता, राष्ट्र-निर्माण

प्रस्तावना

आधुनिक भारत को समझने के लिए केवल आर्थिक आँकड़े या राजनीतिक घटनाएँ पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए समाज की जमीनी सच्चाइयों, ऐतिहासिक संदर्भों तथा आम नागरिकों के अनुभवों को समझना आवश्यक है। आज का भारत अत्यंत तीव्र गति से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। बड़े शहरों में ऊँची इमारतें, मोबाइल फ़ोन, इंटरनेट और

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

नई तकनीकें हमारी जीवनशैली को अधिक सुविधाजनक बना रही हैं। किंतु, क्या प्रत्येक भारतीय का जीवन वास्तव में इतना ही सहज और समृद्ध है? क्या भारत का विकास वास्तव में सभी वर्गों तक पहुँच रहा है, या केवल कुछ विशेष लोगों तक सीमित है? क्या आर्थिक प्रगति के साथ सामाजिक न्याय, समान अवसर और मानवीय गरिमा भी सुनिश्चित हो रही हैं? क्या हम आधुनिकता के नाम पर अपनी सांस्कृतिक जड़ों, मानवीय मूल्यों और नैतिक चेतना को खो रहे हैं? क्या शासन व्यवस्था वास्तव में पारदर्शी, उत्तरदायी और जनकल्याणकारी है? क्या नैतिक निर्णय आज भी व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने होने चाहिए? क्या राष्ट्र-निर्माण केवल आर्थिक विकास से संभव है, या उसके लिए सामाजिक संवेदना, नैतिकता और समानता भी आवश्यक है? क्या हम भारत की विविधता को उसकी शक्ति मानते हैं, या उसे विभाजन का कारण बना रहे हैं?

इन पुस्तकों का सबसे बड़ा योगदान यही है कि वे हमें तैयार उत्तर नहीं देतीं, बल्कि सही प्रश्न पूछना सिखाती हैं। और एक जागरूक समाज की शुरुआत हमेशा सही प्रश्नों से ही होती है। इस प्रश्न का उत्तर हमें आधुनिक भारत पर लिखी गई अनेक महत्वपूर्ण कृतियों में प्राप्त होता है। इन पुस्तकों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि वास्तविक विकास वही है जो समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचे। हमें ऐसे भारत के निर्माण की आवश्यकता है, जहाँ कोई भी व्यक्ति पीछे न छूटे और प्रत्येक नागरिक को आगे बढ़ने के समान अवसर प्राप्त हों। भारत केवल एक देश नहीं, बल्कि एक सामूहिक जिम्मेदारी है, क्योंकि हमारी सोच और कर्म ही उसके भविष्य का निर्माण करते हैं।

इस संदर्भ में रामचंद्र गुहा, पी. साईनाथ, और पंडित जवाहरलाल नेहरू की कृतियाँ आधुनिक भारत की आत्मा, उसकी चुनौतियों तथा समकालीन सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

रामचंद्र गुहा की पुस्तक **"इंडिया आफ्टर गाँधी"** स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भारत के निर्माण, संघर्ष और विकास की एक व्यापक ऐतिहासिक व्याख्या प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक केवल राजनीतिक घटनाओं का विवरण नहीं देती, बल्कि यह बताती है कि भारत ने एक राष्ट्र के रूप में स्वयं को कैसे गढ़ा। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत के सामने अनेक जटिल चुनौतियाँ थीं—देश का विभाजन, शरणार्थियों का पुनर्वास, रियासतों का एकीकरण, भाषाई विविधता, जातीय असमानता, धार्मिक तनाव, आर्थिक गरीबी और लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना।

गुहा के अनुसार, भारत का सबसे बड़ा चमत्कार यह था कि उसने इतनी विविधताओं और संकटों के बीच भी लोकतंत्र को अपनाया और उसे निरंतर बनाए रखा। जब अनेक विद्वानों को यह संदेह था कि भारत जैसा बहुभाषी, बहुधार्मिक और सामाजिक रूप से विभाजित देश लोकतंत्र को स्थायी रूप से नहीं चला पाएगा, तब भारत ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के माध्यम से प्रत्येक नागरिक को समान राजनीतिक अधिकार दिए। यह निर्णय केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम था।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

पुस्तक में विभाजन की त्रासदी का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। 1947 के विभाजन ने लाखों लोगों को विस्थापित किया, हजारों परिवार टूट गए और सांप्रदायिक हिंसा ने समाज को गहरे घाव दिए। इसके बावजूद भारत ने प्रतिशोध के स्थान पर लोकतांत्रिक और संवैधानिक मार्ग को चुना। यह भारतीय राष्ट्र-निर्माण की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक थी। रामचंद्र गुहा रियासतों के एकीकरण को भी विशेष महत्व देते हैं। स्वतंत्रता के समय भारत में सैकड़ों रियासतें थीं, जिनका भारतीय संघ में समावेश आसान नहीं था। सरदार वल्लभभाई पटेल और वी.पी. मेनन के प्रयासों से इन रियासतों का सफल एकीकरण हुआ, जिसने भारत की राजनीतिक एकता को मजबूत आधार प्रदान किया।

भाषा के प्रश्न पर भी पुस्तक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। स्वतंत्रता के बाद हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने और राज्यों के भाषाई पुनर्गठन को लेकर व्यापक विवाद उत्पन्न हुए। कई क्षेत्रों में आंदोलनों और असंतोष की स्थिति बनी। गुहा बताते हैं कि भारत ने इन समस्याओं का समाधान दमन से नहीं, बल्कि संवाद और संवैधानिक व्यवस्था के माध्यम से किया। राज्यों का भाषाई आधार पर पुनर्गठन भारतीय संघवाद की शक्ति का प्रमाण बना। पुस्तक में लोकतंत्र और चुनाव प्रणाली की मजबूती पर विशेष बल दिया गया है। भारत ने नियमित चुनाव, स्वतंत्र न्यायपालिका, स्वतंत्र प्रेस और संवैधानिक संस्थाओं के माध्यम से लोकतंत्र को जीवित रखा। आपातकाल (1975–77) का उल्लेख करते हुए गुहा दिखाते हैं कि जब लोकतंत्र पर संकट आया, तब जनता ने चुनाव के माध्यम से सत्ता परिवर्तन कर यह सिद्ध किया कि भारतीय लोकतंत्र केवल कागज़ी व्यवस्था नहीं, बल्कि जनचेतना का हिस्सा है।

सामाजिक असमानता—विशेषकर जाति, वर्ग और लिंग के प्रश्न—भी पुस्तक के केंद्र में हैं। संविधान ने समानता का आदर्श प्रस्तुत किया, परंतु सामाजिक यथार्थ में भेदभाव और असमानता बनी रही। दलित आंदोलनों, महिला आंदोलनों और क्षेत्रीय संघर्षों के माध्यम से भारतीय समाज ने अपने भीतर परिवर्तन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। गुहा यह स्पष्ट करते हैं कि लोकतंत्र केवल चुनावों तक सीमित नहीं है; यह सामाजिक न्याय और नागरिक अधिकारों की निरंतर प्रक्रिया है। आर्थिक दृष्टि से भी भारत ने योजनाबद्ध विकास, औद्योगीकरण, हरित क्रांति और उदारीकरण जैसे विभिन्न चरणों का अनुभव किया। गरीबी, बेरोज़गारी और असमानता जैसी समस्याएँ बनी रहीं, फिर भी भारत ने विकास के अनेक नए मार्ग खोजे। गुहा यह दिखाते हैं कि आर्थिक नीतियाँ केवल सरकार की योजनाएँ नहीं, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन को प्रभावित करने वाली प्रक्रियाएँ हैं।

इस प्रकार "इंडिया आफ्टर गाँधी" यह स्पष्ट करती है कि भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विविधता में निहित एकता है। भारतीय लोकतंत्र की मजबूती केवल सरकारों के बदलने में नहीं, बल्कि संस्थाओं की स्थिरता, संविधान के प्रति आस्था और नागरिकों की जागरूकता में है। यह पुस्तक हमें सिखाती है कि आधुनिक भारत का निर्माण

The Asian Thinker

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

केवल नेताओं ने नहीं किया, बल्कि करोड़ों सामान्य नागरिकों के संघर्ष, धैर्य और सहभागिता ने उसे संभव बनाया। यही कारण है कि यह कृति आधुनिक भारत को समझने के लिए एक अनिवार्य और प्रामाणिक ग्रंथ मानी जाती है।

आज़ादी केवल अंग्रेज़ों के जाने का नाम नहीं है। आज़ादी का मतलब है—

- अपनी बात कहने का अधिकार,
- दूसरों की बात सुनने का धैर्य,
- नियमों और संविधान का सम्मान।

आज़ादी केवल अधिकार नहीं, बल्कि ज़िम्मेदारी भी है। इस किताब से हमें यह सीख मिलती है कि:

- मत देना, नियम मानना और दूसरों का सम्मान करना नागरिक होने की पहचान है।
- आज़ादी सिर्फ़ मिलने की चीज़ नहीं, उसे निभाना भी पड़ता है।
- अच्छे नागरिक वही होते हैं जो अधिकारों के साथ कर्तव्यों को भी निभाते हैं।

गुरचरन दास की पुस्तक **"द डिफीकल्टी ऑफ़ बीइंग गुड"** नैतिकता, धर्म, कर्तव्य और मानवीय मूल्यों पर आधारित एक अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है। यह पुस्तक महाभारत के पात्रों और घटनाओं के माध्यम से आधुनिक जीवन की नैतिक जटिलताओं को समझाने का प्रयास करती है। लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि जीवन में सही और गलत का निर्णय हमेशा सरल नहीं होता। कई बार परिस्थितियाँ इतनी जटिल होती हैं कि अच्छाई का मार्ग पहचानना ही कठिन हो जाता है। यह पुस्तक केवल धार्मिक या पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि आधुनिक समाज, राजनीति, प्रशासन और व्यक्तिगत जीवन के नैतिक प्रश्नों की गहरी पड़ताल है। गुरचरन दास महाभारत के पात्रों — युधिष्ठिर, अर्जुन, भीष्म, दुर्योधन, कर्ण, द्रौपदी और कृष्ण — के माध्यम से यह दिखाते हैं कि हर व्यक्ति के भीतर अच्छाई और कमजोरी दोनों होती हैं। कोई भी पात्र पूर्णतः अच्छा या पूर्णतः बुरा नहीं है। यही बात आज के समाज पर भी लागू होती है।

युधिष्ठिर को सत्य और धर्म का प्रतीक माना जाता है, फिर भी वे जुए के खेल में अपनी पत्नी द्रौपदी तक को दाँव पर लगा देते हैं। यह घटना बताती है कि अच्छे और धर्मनिष्ठ व्यक्ति भी गलत निर्णय ले सकते हैं। अर्जुन युद्धभूमि में अपने ही संबंधियों के विरुद्ध युद्ध करने की नैतिक दुविधा में पड़ जाते हैं। यह स्थिति आज के उस व्यक्ति की तरह है जिसे अपने कर्तव्य और भावनाओं के बीच कठिन चुनाव करना पड़ता है। कर्ण एक महान योद्धा और दानवीर हैं, लेकिन दुर्योधन के प्रति निष्ठा के कारण अन्याय का साथ देते हैं। इससे यह शिक्षा मिलती है कि केवल व्यक्तिगत गुण पर्याप्त नहीं, बल्कि सही पक्ष का चयन भी आवश्यक है।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

लेखक यह प्रश्न उठाते हैं कि "अच्छा" होना वास्तव में क्या है? क्या केवल नियमों का पालन करना ही अच्छाई है, या परिस्थितियों के अनुसार न्यायपूर्ण निर्णय लेना भी आवश्यक है? उदाहरण के लिए, भीष्म ने अपने वचन का पालन किया, परंतु अन्याय के समय मौन रहकर क्या वे वास्तव में धर्म का पालन कर रहे थे? इस प्रकार पुस्तक यह सिखाती है कि नैतिकता केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि संवेदनशील और न्यायपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता है।

आज के भारत में यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। विकास, राजनीति, प्रशासन और आर्थिक प्रगति के बीच कई बार नैतिक मूल्यों की उपेक्षा होती दिखाई देती है। भ्रष्टाचार, सत्ता का दुरुपयोग, सामाजिक असमानता और व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण समाज में नैतिक संकट उत्पन्न होता है। ऐसे समय में यह पुस्तक हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या केवल विकास पर्याप्त है, यदि उसमें मानवीय संवेदनाएँ और न्याय नहीं है? गुरचरन दास यह भी बताते हैं कि शक्ति के साथ जिम्मेदारी का होना आवश्यक है। यदि किसी व्यक्ति के पास अधिकार, पद या प्रभाव है, तो उसका उपयोग केवल निजी लाभ के लिए नहीं, बल्कि समाज के कल्याण के लिए होना चाहिए। महाभारत में सत्ता संघर्ष के कारण विनाश होता है, और यही चेतावनी आज के राजनीतिक और सामाजिक जीवन में भी दिखाई देती है।

यह पुस्तक बच्चों और युवाओं के लिए विशेष रूप से प्रेरणादायक है, क्योंकि यह उन्हें केवल नैतिक उपदेश नहीं देती, बल्कि वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में निर्णय लेने की समझ विकसित करती है। यह सिखाती है कि सही रास्ता चुनने के लिए साहस चाहिए। कई बार सत्य बोलना, अन्याय के विरुद्ध खड़ा होना या अपने स्वार्थ का त्याग करना कठिन होता है, लेकिन यही वास्तविक अच्छाई है। पुस्तक यह भी स्पष्ट करती है कि अच्छाई केवल बाहरी आचरण नहीं, बल्कि भीतर की संवेदना और मानवीय दृष्टि है। किसी नियम का पालन करना पर्याप्त नहीं, यदि उसमें करुणा, न्याय और मानवता का भाव न हो। इसलिए अच्छा इंसान बनना केवल नैतिक शिक्षा का विषय नहीं, बल्कि जीवनभर चलने वाली साधना है। इस प्रकार "द डिफीकल्टी ऑफ़ बीइंग गुड" हमें यह सिखाती है कि नैतिक जीवन आसान नहीं होता। अच्छाई का मार्ग संघर्ष, आत्ममंथन और साहस की माँग करता है। यह पुस्तक आधुनिक भारत के सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में भी अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह हमें याद दिलाती है कि प्रगति तभी सार्थक है जब उसके साथ न्याय, ईमानदारी और इंसानियत भी जुड़ी हो। यही इस पुस्तक का सबसे बड़ा संदेश है।

पी. साईनाथ की पुस्तक "एवरीबॉडी लव्स ए गुड ड्रॉट" आधुनिक भारत के ग्रामीण जीवन, गरीबी, भूख, बेरोज़गारी और विकास की असमानताओं को उजागर करने वाली अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है। यह पुस्तक केवल रिपोर्टों और आँकड़ों पर आधारित नहीं है, बल्कि लेखक के प्रत्यक्ष अनुभवों, यात्राओं और ग्रामीण भारत के लोगों से हुई मुलाकातों पर आधारित है। साईनाथ एक पत्रकार के रूप में भारत के दूर-दराज़ गाँवों में गए, वहाँ के किसानों,

The Asian Thinker

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

मज़दूरों, महिलाओं और गरीब परिवारों के जीवन को नज़दीक से देखा, और उनकी वास्तविक समस्याओं को शब्द दिए।

इस पुस्तक का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह "विकास" की उस चमकदार तस्वीर को चुनौती देती है, जो अक्सर मीडिया, सरकार और नीति-निर्माण में दिखाई जाती है। बड़े शहरों की ऊँची इमारतें, उद्योग, तकनीकी प्रगति और आर्थिक विकास की चर्चा तो बहुत होती है, लेकिन गाँवों में रहने वाले करोड़ों लोगों की पीड़ा अक्सर अनदेखी रह जाती है। साईनाथ बताते हैं कि भारत का वास्तविक चेहरा महानगरों में नहीं, बल्कि गाँवों में दिखाई देता है।

पुस्तक में सूखा प्रभावित क्षेत्रों का मार्मिक चित्रण है। कई गाँवों में लोग पीने के पानी के लिए मीलों दूर जाते हैं, खेती के लिए पर्याप्त जल नहीं होता, और पशुओं तक के लिए चारा उपलब्ध नहीं होता। सरकार द्वारा घोषित राहत योजनाएँ अक्सर कागज़ों तक सीमित रह जाती हैं। जिन लोगों को सहायता की सबसे अधिक आवश्यकता होती है, वे प्रशासनिक लापरवाही और भ्रष्टाचार के कारण उससे वंचित रह जाते हैं। यही कारण है कि लेखक व्यंग्यात्मक रूप से शीर्षक रखते हैं— 'एवरीबॉडी लव्स ए गुड ड्रॉट', अर्थात् जैसे सूखा कुछ लोगों के लिए लाभ का साध बन जाता है।

साईनाथ यह दिखाते हैं कि गरीबी केवल धन की कमी नहीं, बल्कि अवसरों की कमी भी है। ग्रामीण भारत में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं का अभाव लोगों को लगातार संघर्ष की स्थिति में रखता है। किसान ऋण के बोझ में दबे रहते हैं, मज़दूरों को स्थायी काम नहीं मिलता, और महिलाएँ दोहरे शोषण का सामना करती हैं—एक ओर गरीबी, दूसरी ओर सामाजिक असमानता। यह पुस्तक किसानों की समस्याओं को भी गहराई से प्रस्तुत करती है। क्या ग्रामीण भारत, किसान, मजदूर, दलित, आदिवासी और वंचित वर्ग विकास की मुख्यधारा में शामिल हैं? खेती पर निर्भर लाखों परिवार प्राकृतिक आपदाओं, कर्ज़, कम उत्पादन और बाज़ार की अस्थिरता से प्रभावित होते हैं। सरकार की नीतियाँ कई बार बड़े उद्योगों और शहरी क्षेत्रों के पक्ष में अधिक दिखाई देती हैं, जबकि किसानों की वास्तविक समस्याएँ उपेक्षित रह जाती हैं। इससे ग्रामीण समाज में निराशा और असुरक्षा बढ़ती है।

मीडिया की भूमिका पर भी साईनाथ गंभीर प्रश्न उठाते हैं। उनका मानना है कि मुख्यधारा का मीडिया अक्सर शहरों की चकाचौंध, राजनीति और मनोरंजन पर अधिक ध्यान देता है, जबकि गाँवों की भूख, बेरोज़गारी और आत्महत्या जैसे मुद्दे समाचारों में पर्याप्त स्थान नहीं पाते। मीडिया का कार्य केवल आकर्षक समाचार दिखाना नहीं, बल्कि समाज के उन वर्गों की आवाज़ बनना भी है, जो स्वयं अपनी बात नहीं पहुँचा सकते - क्या हमारा लोकतंत्र केवल चुनावों तक सीमित हो गया है, या नागरिक वास्तव में जागरूक, सक्रिय और प्रश्न पूछने वाले हैं? क्या मीडिया सत्ता की प्रशंसा करने का माध्यम बन रहा है, या समाज के कमजोर वर्गों की आवाज़ भी बन रहा है?

यह पुस्तक हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि विकास केवल आर्थिक वृद्धि का नाम नहीं है। यदि किसी देश में करोड़ों लोग भूख, अशिक्षा और बेरोज़गारी से जूझ रहे हों, तो केवल GDP की वृद्धि को वास्तविक प्रगति नहीं

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

कहा जा सकता। सच्चा विकास वही है जो समाज के सबसे कमजोर और वंचित व्यक्ति तक पहुँचे। बच्चों और युवाओं के लिए यह पुस्तक विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन्हें संवेदनशील नागरिक बनने की प्रेरणा देती है। यह सिखाती है कि समाज की समस्याओं को समझना, दूसरों के दुख को महसूस करना और न्यायपूर्ण व्यवस्था के लिए आवाज़ उठाना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है।

यह पुस्तक हमें निम्नलिखित महत्वपूर्ण संदेश देती है—

• विकास केवल शहरों तक सीमित नहीं होना चाहिए।
• गरीबों और ग्रामीणों की समस्याएँ अक्सर अनदेखी रह जाती हैं।
• मीडिया को सच दिखाना चाहिए, केवल चमक-दमक नहीं।
• किसी देश की असली तस्वीर उसके गाँवों से समझ में आती है।
• वास्तविक विकास वही है जो सबसे कमजोर व्यक्ति तक पहुँचे।

इस प्रकार **"एवरीबॉडी लव्स ए गुड ड्रॉट"** केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि आधुनिक भारत की सामाजिक असमानताओं का दर्पण है। यह हमें याद दिलाती है कि यदि विकास में समानता, न्याय और मानवीय संवेदना नहीं है, तो वह अधूरा है। पी. साईनाथ की यह कृति हमें समाज को देखने की नई दृष्टि देती है और यह समझाती है कि भारत की आत्मा आज भी उसके गाँवों में बसती है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू की प्रसिद्ध कृति **'द डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया'** केवल भारत के इतिहास का वर्णन नहीं करती, बल्कि भारत की आत्मा, उसकी सांस्कृतिक चेतना, उसकी बौद्धिक परंपरा और उसके भविष्य की संभावनाओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक भारत की खोज के साथ-साथ भारतीयता की खोज भी है। इस कृति में भारत को किसी स्थिर, जड़ और केवल अतीत-प्रधान सभ्यता के रूप में नहीं देखा, बल्कि एक जीवंत, गतिशील और निरंतर विकसित होने वाली सभ्यता के रूप में प्रस्तुत किया है।

भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विविधता में निहित एकता है। भारत अनेक भाषाओं, धर्मों, संस्कृतियों, परंपराओं, जातीय समूहों और जीवन-शैलियों का देश है, फिर भी उसके भीतर एक गहरी सांस्कृतिक एकता विद्यमान है। यही विविधता भारत को विशिष्ट बनाती है। नेहरू के अनुसार, भारतीय सभ्यता ने सदियों से विभिन्न विचारों, आस्थाओं और संस्कृतियों को आत्मसात किया है। इस समावेशी प्रवृत्ति ने भारत को सहिष्णु, उदार और मानवीय बनाया। उनके भारत में संकीर्ण राष्ट्रवाद, धार्मिक कट्टरता और सामाजिक भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं है।

भारत वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है। अंधविश्वास, रूढ़िवाद और अवैज्ञानिक सोच राष्ट्र की प्रगति में बाधा है। किसी भी आधुनिक राष्ट्र का निर्माण तर्क, विवेक और वैज्ञानिक चेतना के बिना संभव नहीं है। इसलिए शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि आलोचनात्मक सोच और सामाजिक परिवर्तन का साधन भी है। विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन-दृष्टि का हिस्सा है। यही कारण है कि स्वतंत्र भारत में वैज्ञानिक

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

संस्थानों, तकनीकी शिक्षा और अनुसंधान का विशेष महत्व है। भारत लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित है। लोकतंत्र तभी सार्थक है जब उसमें समान अवसर, सामाजिक न्याय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हो। उनका भारत ऐसा समाज था जहाँ व्यक्ति की गरिमा सर्वोपरि हो और राज्य का उद्देश्य नागरिकों के समग्र विकास को सुनिश्चित करना हो। मनुष्य को किसी जाति, धर्म या वर्ग से पहले एक मानव के रूप में देखा जाता है। मेरे सपनों का भारत सामाजिक समानता पर आधारित है। यहाँ किसी व्यक्ति की पहचान उसके धर्म, जाति, लिंग, भाषा या आर्थिक स्थिति से नहीं, बल्कि उसकी योग्यता और मानवता से हो। हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, हर युवा को सम्मानजनक रोजगार का अवसर प्राप्त हो और हर नागरिक को न्याय सुलभ हो। शिक्षा केवल नौकरी पाने का माध्यम न होकर चरित्र निर्माण, नैतिक विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व का साधन बने।

मेरे सपनों का भारत ऐसा लोकतांत्रिक राष्ट्र है जहाँ नागरिक केवल अधिकारों की बात न करें, बल्कि अपने कर्तव्यों के प्रति भी सजग हों। जहाँ लोग मतदान करें, सामाजिक मुद्दों पर संवाद करें और शासन को पारदर्शी तथा जवाबदेह बनाएँ। लोकतंत्र केवल संविधान की धारा न होकर जनजीवन की संस्कृति बने। मीडिया स्वतंत्र हो, न्यायपालिका निष्पक्ष हो और प्रशासन जनकल्याण के लिए समर्पित हो। साथ ही, मेरे सपनों का भारत बहुभाषी, बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक होकर भी एक साझा राष्ट्रीय चेतना से जुड़ा हो। हिंदी, तमिल, बंगाली, मराठी, पंजाबी, उर्दू जैसी सभी भाषाएँ भारत की आत्मा का हिस्सा हैं। विभिन्न धर्म और संस्कृतियाँ प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि सहअस्तित्व का उदाहरण प्रस्तुत करें। "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना केवल आदर्श न होकर व्यवहार में दिखाई दे।

अंततः, 'द डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया' केवल भारत के अतीत की खोज नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा का दार्शनिक मानचित्र है। यह हमें सिखाती है कि भारत की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता, तर्कशीलता, सहिष्णुता और मानवीय मूल्यों में निहित है। नेहरू का भारत और मेरे सपनों का भारत—दोनों का मूल उद्देश्य एक ही है: एक ऐसा राष्ट्र जहाँ स्वतंत्रता केवल राजनीतिक न होकर सामाजिक, बौद्धिक और मानवीय भी हो। यही भारत की सच्ची पहचान है और यही एक विकसित, समतामूलक और प्रगतिशील राष्ट्र की आधारशिला है।

इन पुस्तकों को एक साथ पढ़ने पर आधुनिक भारत की एक जटिल, बहुआयामी और यथार्थपरक तस्वीर सामने आती है। भारत केवल विकास, प्रगति और उपलब्धियों की कहानी नहीं है, बल्कि संघर्ष, असमानता, सामाजिक विषमता और निरंतर परिवर्तन की भी कहानी है। एक ओर देश तकनीकी उन्नति, डिजिटल क्रांति, वैश्वीकरण, अंतरिक्ष विज्ञान, शिक्षा और आर्थिक विस्तार के नए आयाम छू रहा है, वहीं दूसरी ओर गरीबी, बेरोज़गारी, जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, ग्रामीण–शहरी विभाजन और सामाजिक बहिष्करण जैसी समस्याएँ अभी भी गहरी जड़ें जमाए हुए हैं। यही विरोधाभास आधुनिक भारत की सबसे बड़ी वास्तविकता है।

आज भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी, स्टार्टअप संस्कृति, डिजिटल भुगतान, स्मार्ट शहर, मेट्रो नेटवर्क, ऑनलाइन शिक्षा और वैश्विक व्यापार ने देश को नई पहचान दी है। युवा पीढ़ी अवसरों से भरी दुनिया में आगे बढ़ रही है। परंतु दूसरी ओर, लाखों लोग अब भी बुनियादी सुविधाओं—रोटी,

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा—से वंचित हैं। किसान आत्महत्या, बेरोज़गार युवा, झुग्गियों में रहने वाले श्रमिक, बाल श्रम और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा हमें यह याद दिलाते हैं कि विकास केवल ऊँची इमारतों और जीडीपी की वृद्धि से नहीं मापा जा सकता।

यहीं से "सच्चे विकास" की अवधारणा सामने आती है। सच्चा विकास वह है जो समाज के हर वर्ग तक पहुँचे। यदि विकास केवल कुछ लोगों तक सीमित रह जाए और बहुसंख्यक लोग उससे बाहर रह जाएँ, तो वह विकास नहीं, बल्कि असंतुलन है। सामाजिक न्याय, समान अवसर, शिक्षा, स्वास्थ्य, सम्मान और सुरक्षा—ये सभी विकास के अनिवार्य तत्व हैं। किसी राष्ट्र की प्रगति का सही मापदंड यह है कि उसके सबसे कमजोर नागरिक कितने सुरक्षित, सम्मानित और सक्षम हैं।

मीडिया की भूमिका इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। मीडिया केवल समाचार देने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज का दर्पण और लोकतंत्र का प्रहरी है। उसका कार्य केवल सरकार की उपलब्धियों का प्रचार करना नहीं, बल्कि उन आवाज़ों को सामने लाना भी है जो अक्सर अनसुनी रह जाती हैं। यदि मीडिया केवल सत्ता की प्रशंसा करे और गरीब, दलित, आदिवासी, महिला, किसान, मजदूर और हाशिए पर खड़े लोगों की समस्याओं को न दिखाए, तो वह अपनी लोकतांत्रिक जिम्मेदारी से विमुख हो जाता है। एक सशक्त मीडिया वही है जो प्रश्न पूछे, अन्याय को उजागर करे और जनता को जागरूक बनाए- क्या "मेरे सपनों का भारत" केवल एक आदर्श कल्पना है, या उसे व्यवहार में लाने के लिए हम सक्रिय प्रयास कर रहे हैं? क्या अलग विचार, असहमति और आलोचनात्मक सोच को लोकतंत्र की शक्ति माना जा रहा है, या उसे दबाने का प्रयास हो रहा है?

इन पुस्तकों से यह भी स्पष्ट होता है कि आधुनिक भारत को समझने के लिए केवल सतही जानकारी पर्याप्त नहीं है। इसके लिए आलोचनात्मक दृष्टि, ऐतिहासिक चेतना और मानवीय संवेदना आवश्यक है। आलोचनात्मक दृष्टि का अर्थ है—हर बात को तर्क और विवेक से देखना। जो दिखाई दे रहा है, उसके पीछे क्या कारण हैं, यह समझना। किसी भी नीति, विचार या व्यवस्था को आँख बंद करके स्वीकार करना उचित नहीं। प्रश्न पूछना, विचार करना और विश्लेषण करना ही एक जागरूक नागरिक की पहचान है।

ऐतिहासिक चेतना भी उतनी ही आवश्यक है। वर्तमान समस्याओं की जड़ें अक्सर इतिहास में होती हैं। जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, आर्थिक विषमता और सामाजिक संरचनाएँ अचानक नहीं बनीं; इनके पीछे लंबे ऐतिहासिक कारण हैं। जब हम इतिहास को समझते हैं, तभी वर्तमान को सही रूप में देख पाते हैं और भविष्य के लिए बेहतर निर्णय ले सकते हैं। मानवीय संवेदना इस पूरी प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण आधार है। यदि विकास में संवेदना नहीं है, तो वह केवल मशीनों और आँकड़ों का विकास रह जाता है। समाज तभी बेहतर बनता है जब हम दूसरों के दुःख को महसूस करें, उनकी परिस्थितियों को समझें और उनके अधिकारों के लिए आवाज़ उठाएँ। संवेदनशीलता ही हमें एक बेहतर मनुष्य और एक जिम्मेदार नागरिक बनाती है।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: II, April-June, 2026 Issue-30 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

इन पुस्तकों से हमें कई महत्वपूर्ण जीवन-मूल्य और सामाजिक शिक्षाएँ मिलती हैं—

पहली सीख यह है कि सच्चा विकास सबके लिए होता है। यदि समाज का कोई वर्ग पीछे रह जाए, तो राष्ट्र पूर्ण रूप से विकसित नहीं कहा जा सकता। विकास समावेशी होना चाहिए। समाज तभी मजबूत बनता है जब हम एक-दूसरे को समझते हैं। विविधता भारत की पहचान है—भाषा, धर्म, संस्कृति और विचारों की भिन्नता ही उसकी शक्ति है। सहिष्णुता, संवाद और परस्पर सम्मान समाज को मजबूत बनाते हैं।

सोचने और सवाल पूछने की आदत बहुत जरूरी है। लोकतंत्र में नागरिकों का जागरूक होना अनिवार्य है। बिना प्रश्न किए केवल अनुसरण करना व्यक्ति और समाज दोनों को कमजोर बनाता है। हर बात को बिना सोचे-समझे मान लेना उचित नहीं। अंधविश्वास, अफवाह और पूर्वाग्रह समाज को पीछे ले जाते हैं। तर्कशीलता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। अलग राय रखना लोकतंत्र की ताकत है। असहमति लोकतंत्र की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी जीवंतता का प्रमाण है। विचारों की विविधता से ही बेहतर निर्णय और स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। सबसे महत्वपूर्ण सीख यह है कि सोचने वाला दिमाग ही बेहतर समाज बनाता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना नहीं, बल्कि स्वतंत्र चिंतन, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करना है।

अंततः, आधुनिक भारत को समझना केवल तथ्यों को जानना नहीं, बल्कि उसके भीतर छिपे संघर्षों, संभावनाओं और मानवीय प्रश्नों को समझना है। विकास तभी सार्थक है जब उसमें न्याय, समानता और संवेदना हो। एक सशक्त राष्ट्र वही है जहाँ नागरिक केवल सफल नहीं, बल्कि सजग, संवेदनशील और विचारशील भी हों। यही आधुनिक भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता है और यही एक बेहतर भविष्य की वास्तविक आधारशिला है।

संदर्भ

1. गुहा, आर. (2007). इंडिया आफ़्टर गांधी: द हिस्ट्री ऑफ़ द वर्ल्ड्स लार्जेस्ट डेमोक्रेसी. पिकाडोर इंडिया.
2. दास, जी. (2009). द डिफ़िकल्टी ऑफ़ बीइंग गुड: ऑन द सटल आर्ट ऑफ़ धर्म. पेंगुइन बुक्स इंडिया.
3. साईनाथ, पी. (1996). एवरीबडी लव्ज़ अ गुड ड्रॉट: स्टोरीज़ फ्रॉम इंडियाज़ पूरेस्ट डिस्ट्रिक्ट्स. पेंगुइन बुक्स इंडिया.
4. नेहरू, जे. (1946). द डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

The Asian Thinker